IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षक– प्रशिक्षुको की सहयोगात्मक अधिगम के प्रति अभिवृत्ति

कु0 निरुपमा एम0 एड0 छात्रा

डॉ0 रमेश चंद्रराणा शिक्षा विभाग बिड़ला परिसरश्रीनगर पौड़ी गढ़वाल

गोपाल (EMRS TGT Hindi)

स्नेहाउनियाल(M. Ed H. N. B. G. U)

शोध – सार (Abstract)

सहयोगात्मक अधिगम शिक्षा सीखने की वह प्रक्रिया है। जिसमें विद्यार्थीआपस में मिलजुलकर सीखते-सिखातेहैं। शिक्षण एक ऐसी गतिशील प्रक्रिया है ।जिसकी गतिशीलता बनाये रखने के लिए अनुकूल दृष्टिकोण और विशिष्ट प्रयास और चेष्टा की आवश्यकता है।शोध कार्य मेंबी0 एड0 केशिक्षक–प्रशिक्षुको की सहयोगात्मक अधिगम के प्रतिअभिवृत्ति का अध्ययन जानने का प्रयास किया गया है।बी0 एड0 के कुल 190 शिक्षक – प्रशिक्षुओं को न्यायदर्श के तौर पर लिया गया।जिसमें सरकारी व गैर सरकारी संस्थान लिये गये है।आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, माध्यमान, प्रमाप विचलन, टी– टेस्ट आदि सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया गया।निष्कर्ष से पता चला कि बी0एड0 शिक्षक– प्रशिक्षुओं की सहयोगात्मक अधिगम के प्रति अभिवृत्ति में कोईअंतर नहीहै।

की– वर्ड–सहयोगात्मक अधिगम ,शिक्षक - प्रशिक्षुक,अभिवृत्ति

प्रस्तावना

मानव समाज यदि पुरातन काल से स्वयं को सुरक्षित रखता है तो वह ' **पूर्णसहयोग** ' व्यवहार के कारण ही है। आज की प्रचलित शिक्षा संबद्धता में हम विद्यार्थी- विद्यार्थियों के मध्य सहयोग पूर्ण एवं सहयोगी मित्रों को नियुक्त करते हुए शिक्षक विद्यार्थी अंतिम क्रिया पर ही बल देते हैं। सन् 1960 के मध्य तक सहयोगी अधिगम मुख्य उपेक्षित ही रहा। प्राथमिक से उच्च स्तर तक की शिक्षा व्यवस्था प्रतिस्पर्धात्मक (प्रतिस्पर्धी) एवं वैयक्तिकता (व्यक्तित्व) पर आधारित थी। डार्विन के सामाजिक दर्शन का शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ा **सर्वाइवल ऑफ फिटेस्ट** एवं **डॉग ईट डॉग वर्ल्ड** ने शिक्षा के अनुसार प्रतियोगात्मक बनाया। वहींदूसरी ओर **बी0एफ0 स्किनर** (बीएफस्किनर) केअभिक्रमितअनुदेशन (**प्रोग्राम्डइंस्ट्रक्शन**) परआधारित हो गए ने वैदिकअधिगम कोऔरअधिक महत्वपूर्ण बना दिया।आज बात यह है कि शिक्षा न तो छात्रों को गलाकाट प्रतियोगिता की तैयारी करनी चाहिए और न ही अकेले अध्ययन कर स्वयं का ही लाभ उठाने वाला बनना चाहिए। मानव समाज में एक संप्रदाय और सहिष्णु मानव समाज की स्थापना हो सके, इसके लिए आज शिक्षा में सहिष्णु मानव समाज के सभी सदस्यों को शामिल किया जा रहा है। आधार का अर्थ एक समान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक साथ कार्य करना है। अत: अगम का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य 'सहकारिता' होना चाहिए।सहयोगी अधिगम के विद्यार्थियों को छोटे लाइसेंस का अनुदेशन दिया जाता है, जिसमें सभी विद्यार्थियों को एक साथ कार्य करने और स्वयं के तथा एक दूसरे के अधिगम को अधिकतम सुदृढ़ शिक्षा प्रदान करने का निर्देश दिया जाता है। संगति अधिगम न तो प्रतियोगात्मक होता है और न ही वैयक्तिक। ग्रुप के हित के साथ स्वयं का हित इसमें होता है। यदि कोई एक समूह का हित करता है तो वह उसे त्याग देता है।1900 की शुरुआत में गेस्टाल्ट

स्कूल ऑफ साइकोलॉजी के एक साइकोलॉजी (कर्ट कोफ्का) कर्ट कोफ्का ने कहा था कि ग्रुप में इंटरनैशनल भारत की सीमा अलग-अलग हो सकती है। 1920 और 1930 के दशक में कर्ट कोका के मित्र कर्ट लिविन (कर्ट लेविन) ने स्पष्ट रूप से कहा था कि "किसी समूह की शक्ति उसके समूह की आत्म-निर्भरता है, जो एक उभयनिष्ठ लक्ष्य के कारण है।" ग्रुप एक स्पीडमैन संपूर्ण की एकल कार्य करता है। सहयोगात्मक अधिगम आज छात्रों के उच्च्व अधिगम की मांग है। यह अधिगम छात्रों को स्वयं करके{learning by doing} सीखने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार के अधिगम में छात्रों को छोटे-छोटे समूहों में बांटकर निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न मिल-जुलकर करना होता है। इस प्रकार छात्रों को स्वयं तो सीखना होता ही है,साथ ही समूह के अन्य छात्रों के अधिगम को भी देखना होता है। अधिगम का यह प्रकार छात्रों को न केवल परिस्थितियों का अध्ययन करना सिखाता है,अपितु उनमें सामाजिक कौशलों जैसे-सहयोग,सहायता,समायोजन आदि का विकास करता है। यह विचारों के आदान-प्रदान,सामुदायिक-सहयोगी शिक्षण,अधिगम ,निर्देशनव बुद्धि के तीव्र विकास को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार सहयोगात्मक अधिगम= विस्तृत व व्यापक अधिगम।सहयोगात्मक शिक्षा विद्यार्थियों को आपस में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती है तथाछात्रों को पर्यावरण और पाठ्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सक्षम बनाया जाता है इसमें छात्रों की शैक्षणिक सफलता में भी वृद्धिहोती और छात्रों में सकारात्मक भावनाओं और संवेगों का विकास होता है ।डेमारसीऔरकॉस्कुन(2020) सहयोगात्मक शिक्षणपद्धति के अध्ययन में छात्रों को आपसी काम करने में सहयोग मिलता है तथा बच्चे कई तरीके के क्रियात्मक तथा प्रयोगात्मक कार्य करते हैंअध्ययन का मुख्य उद्देश्य छात्रों कि अपने समूह में एक साथ काम करने और सहयोगात्मक कार्यकरने की परियोजनापर काम करने की क्षमता और कौशल का पता लगाना होता है ।एट अल (2019) सहयोगात्मक अधिगम मेंछात्रों का एक छोटा समूह अपने सीखने और समूह के सभी सदस्य के सीखने के लिए जिम्मेदार हैं।जिसमें छात्र एक सामान्य कार्य को पूरा करने के लिए छोटे समूह में काम करते हैं । धवन , (2015) सहयोगात्मक शिक्षण पद्धति का उपयोग कक्षाओं में छात्रों के बीच सहयोग के मूल्यांकन का निर्माण कर सकता है ।साथ मिलकर काम करने का उनका पारस्परिक संबंध काफी हद तक बढ़ गया और दूसरों के साथ साझा करने की आदत भी काफी बढ़ गयीहै।उन्होंने पाया कि सहयोगात्मक शिक्षा आवश्यक संचार कौशल , सामाजिक जागरूकता ,विभिन्न समूह बातचीत ,आत्मविश्वास , सामाजिक कौशल ,सामाजिक जागरूकता ,विभिन्न समूह बातचीत 'आत्मविश्वास , सामाजिक कौशल ,सकारात्मकता आत्म – सम्मान और विषयों और स्कूल के प्रति दृष्टिकोण के विकास कोप्रभावितकरती है । कुमार , (2015)सहयोगात्मक शिक्षण के प्रति उन्होंने पाया कि सभी छात्र अपनी सामान्य कक्षा के लिए सहयोगात्मक शिक्षण पद्धति के साथ सहज हैऔर एक साथ काम करके अपने सामाजिक संबंधों को बेहतर बनाएंगेऔर परिणाम से पता चला कि सहयोगात्मक शिक्षा ने उनके शैक्षिक अनुभव से टीमवर्क के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण विकसित किया ।अख्तर , एटअल. (2012)

समस्याकथन

बी0 एड0 शिक्षक–प्रशिक्षुको की सहयोगात्मक अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

(1) लिंग के आधार पर बी0 एड0 शिक्षक – प्रशिक्षुकों की सहयोगात्मक अधिगम के प्रति अभिवृत्ति काअध्ययनकरना ।

(2) क्षेत्र के आधार पर बी0 एड0 शिक्षक - प्रशिक्षुकों की सहयोगात्मक अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

(1)-पुरुष एवं महिला के आधार पर बी0एड0 शिक्षक – प्रशिक्षुओ सहयोगात्मक अधिगम के प्रति अभिवृत्ति मैं कोई सार्थक अंतर नहीं होगा!

(2)-ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधारपर बी0एड0 शिक्षक -प्रशिक्षुओ की सहयोगात्मक अधिगम के प्रति अभिवृत्ति मैं कोई सार्थक अंतर नहीं होगा!

शोधविधि

अनुसंधानकर्ता द्वारा अपने शोध कार्य को पूरा करने के लिए वर्णात्मक शोध विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

जनसंख्या

प्रस्तुतशोध कार्य हेतु हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय एवं संबंध विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत् समस्त शिक्षक - प्रशिक्षुकों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है ।

न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शोधकर्ती द्वारा यादृश्चिक विधि के माध्यम से 190 शिक्षक – प्रशिक्षुको को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है ।

शोधउपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु अनुसंधानकर्ती द्वारा अपने शोध पर्यवेक्षक के मार्गदर्शन में सहयोगात्मक अधिगम अभिवृति की एक स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है ।

आंकड़ो का विश्लेषण

तालिकासंख्या 1 - लिंग के आधार पर शिक्षक - प्रशिक्षुकों का सहयोगात्मक अधिगम के प्रति अभिवृत्ति

Df=190

तालिकासंख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सहयोगात्मक अधिगम के प्रतिमहिलाओं का मध्यमान 107.14 एवं मानक विचलन 13.892 तथा पुरुषों का मध्यमान 100.63 एवंमानकविचलन 8.032 है ।टी परीक्षण का मान 4.022 है स्वतंत्रता स्तर191 है।जिसके आधार पर परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुयी एवं निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुयी । अतः निष्कर्ष निकाला जा सकता है। कि सहयोगात्मक अधिगम के प्रति महिला एवं पुरुष छात्रअध्यापकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है ।

प्रस्तुत आरेख संख्या 4.6मेंपुरुषों का मध्यमान 100.63 तथा महिलाओं का मध्यमान 107.14 है।

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	t	Sig
पुरुष	101	100.63	8.032		
महिला	91	107.14	13.892	4.022	सार्थक

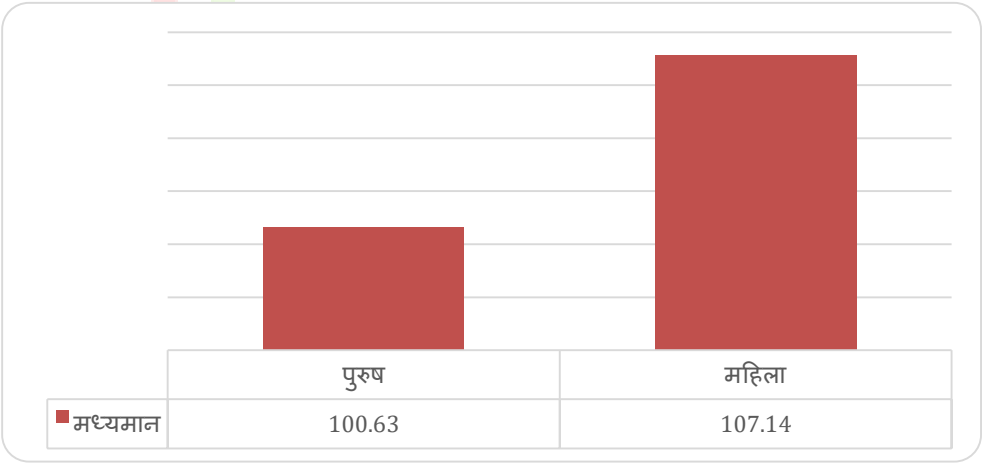

तालिकासंख्या2 : - क्षेत्र के आधार पर शिक्षक - प्रशिक्षुकों का सहयोगात्मक अधिगम के प्रति अभिवृत्ति

Df =190

तालिकासंख्या2के अवलोकन से स्पष्ट होता है । कि सहयोगात्मक अधिगम के प्रतिग्रामीणक्षेत्रकामध्यमान 105.07 एवं मानक विचलन 12.578 तथाशहरी क्षेत्र का मध्यमान 100.60 एवं मानक विचलन 8.377 है । टी परीक्षण का मान 2.474 है।स्वंतत्रता स्तर 191 है।जिसके आधार पर परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुयी एवं निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुयी । अतः निष्कर्ष निकाला जा सकता है । कि सहयोगात्मक अधिगम के प्रति ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है ।

क्षेत्र (Area)	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानकविचलन (Std . Deviation)	t	Sig
ग्रामीण क्षेत्र	134	105.07	12.578		
शहरीक्षेत्र	58	100. 60	8.377	2.474	Sig सार्थक

प्रस्तुत आरेख संख्या 4.7 में ग्रामीण क्षेत्रों का मध्यमान 105.07 तथा शहरी क्षेत्रों का मध्यमान 100.60 है।

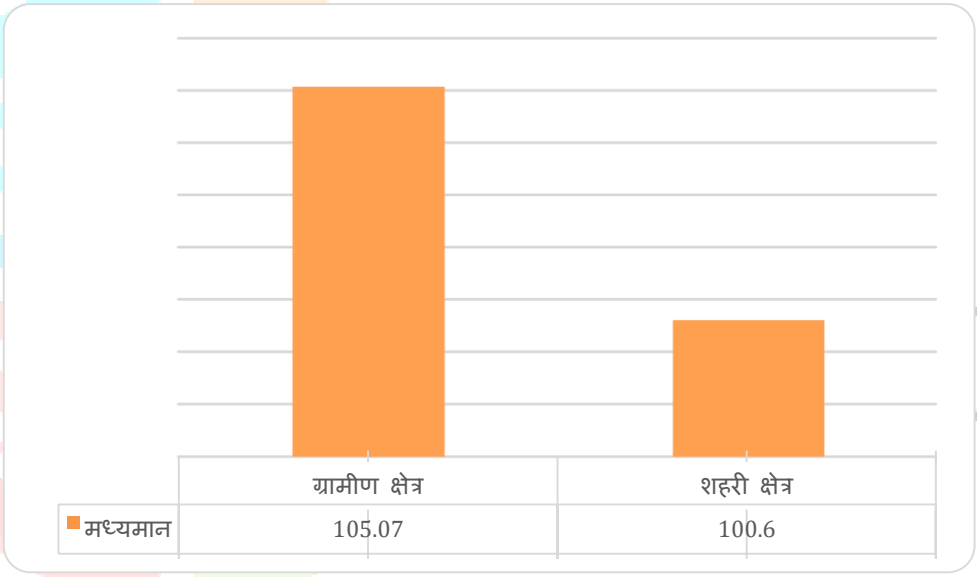

निष्कर्ष

सांख्यिकी जांच हेतु प्राप्त आंकड़ों के अवलोकन के उपरांत प्राप्त परिणाम एवं निष्कर्षों को प्रस्तुत अध्याय में उल्लेखित किया गया है । अवलोकन से प्राप्त परिणाम एवं निष्कर्षों के आधार पर पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पनाओं को स्वीकार एवं अस्वीकार किया गया है। आंकड़ों के अवलोकन के आधार पर प्रस्तुत लघु शोध कार्य में निम्नलिखितपरिणाम एवं निष्कर्षप्राप्तहुए ।

परिणाम 1 - सहयोगात्मक अधिगम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुको की अभिवृत्ति के अध्ययन में लिंग के आधार पर परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुयी एवं निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुयी ।

निष्कर्ष - सहयोगात्मक अधिगम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुकों की अभिवृत्ति के अध्ययन में महिला शिक्षक प्रशिक्षुकों का मध्यमान पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुकों के मध्यमान से अधिक है ।

परिणाम 2 - सहयोगात्मक अधिगम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुकों की अभिवृत्ति के अध्ययन में क्षेत्र के आधार पर परिकल्पना सार्थक सिद्ध हुयी एवं निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुयी।

निष्कर्ष - सहयोगात्मक अधिगम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुकों की अभिवृत्ति के अध्ययन मेंशहरीक्षेत्र का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र के मध्यमान से अधिक है।

शोध की सार्थकता

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सहयोगात्मक अधिगम की अभिवृत्ति में बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के विद्यार्थी के सहयोगी अधिगम पर उसके अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन करने का निर्णय साथ ही साथ बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सहयोगी अधिगम का उनके अभिवृत्ति के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाएगा!सहयोगात्मक अधिगम आज छात्रों के अधिगम की मांग है!यहां अधिगम छात्रों को स्वयं करके(learning by doing) सिखाने का अवसर प्रदान करता है!इस प्रकार के अधिगम में छात्रों को छोटे-छोटे समूहों मैं बांटकर निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न मिलजुल कर करना होता है! इस प्रकार छात्रों को स्वयं तो सीखना होता ही है!साथ ही समूह के अन्य छात्रों के अधिगम को! भी देखना होता है अधिगम का यहां प्रकार छात्रों को ना केवल परिस्थितियों का अध्ययन करना सिखाता है! अपितु उनमें सामाजिक कौशलों जैसे -सहयोग,सहायता, समायोजन आदि का विकास करता है! यह विचारों के आदान-प्रदान, सामुदायिक- सहयोगी शिक्षण, अधिगम, निर्देशन, बुद्धि के तीर विकास को प्रोत्साहित करता है!इस प्रकार सहयोगात्मक अधिगम=विस्तृत व व्यापक अधिगम है ! सहयोगात्मक अधिगम विचारों के पारस्परिक प्रसंस्करण को बढ़ावा देता है! और इस प्रकार छात्रों की सोचने की क्षमता विकसित करता है! सहकारी अधिगम अत्यधिक सकारात्मक है! और सरकारी दृष्टिकोण सभी पाठ्यचर्या क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है! अतः शोधकर्ता इस बात को जानना चाहता है कि बी0एड0 प्रशिक्षार्णियो में अध्ययनरत् विद्यार्थियो पर सहयोगात्मक अधिगम का क्या प्रभाव पड़ता है! जिससे वह इस प्रभाव का अध्ययन करके छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं के उचित धनात्मक या ऋणात्मक भाव की मात्रा में सहयोग कर सके। अतः वर्तमान समय में इस शोध की अति आवश्यकता है ।

संदर्भ

Akhtar, K., Perveen, Q. Kiran, S, Rashid, M. & Satti, A. K. (2012). A Study of Students' Attitude towards Cooperative Learning. International Journal of Humanities and Social Science,2(11), 141-147. Retrieved from www.ijssnet.com.

Dhawan, S. (2014). Collaborative learning among the pupil-teachers influences their practical knowledge of computer: An action research report. European academic research, 1 (10), 3180-3195.

Demarci, C. and Coskun, I. (2020). High school students' opinion about the poster design based on the cooperative learning approach in English course. MANAS journal of social studies, 10 (3),1564-1579.

Kumar, B. (2015). Cooperative Learning: An Innovative Strategy to Classroom Instruction. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies 2(XVII), Retrieved from

Yusmerita. (2019). Strength of cooperative learning method based on CTL on fashion design production. Advance in social science, education and humanities research,178, 455-459.

http://www.srjis.com.

https://www.wikipedia.org

https://unacademy.com

https://ePathshala.nic.in

शोध प्रविधि .हरीश कुमार खत्री .कैलाश पुस्तक सदन ,भोपाल